सं श्रो विव/एफ बी व/130-85/52190. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं व लैण्डसवर्ग इण्डिया प्र व लिए 59-ए, एन ब्राई ब्रोक वाद लिखित मामले में कोई श्री विविद्या की श्

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनयम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचेना सं० 5415-3-श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचेना सं० 11495-जैंक-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचेना की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादयस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादयस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :—

कैया श्री धनी राम की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? सं श्रो वि । एफ बी । 160-85 | 52196 — चूंकि हिरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं व इन्जैक्टो लि व , 20 / 5 , मथुरा रोड , फरीदाबाद , के श्रमिक श्री सुदेश कुमार सैनी तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ते हुए श्रिधिसूचना संठ 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिधिसूचना की घारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनणंय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्यां भी सुदेश कुमार सैनी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है

सं. श्री वि. /एफ बी ब/ 143-85/52202 -- चूंकि हरियाणा के राज्युपाल की राय है कि में. हरियाणा टेलीविजन, सैक्टर-6, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री सत्यपाल सिंह मिलक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीचोगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, ग्रंब, ग्रौद्धोगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुँगे, हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी श्रिधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पहले हुए ग्रिधिसूचना सं. 11495 -जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 हारा उक्त ग्रिधिसूचना की धारा 7 के ग्राचीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत था उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच वातो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से ससंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सत्यपाल सिंह मिलक की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

ण सं. श्रो.वि/जी०जी०एन०/41-85/52208. चंदिक हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1, सचिव, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, चण्डीगढ़, 2 कार्यकारी अभियन्ता, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, डिंठै नं०1, महरोली रोड, गुडगांवा के श्रीमक श्री राजेन्द्र सिंह वसी तथा उसके श्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद किखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औशोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिवितयों का अयोग करते हुए, प्रियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-अम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उनते अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने के व्हेतू निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उनत प्रवन्धकों, तथा अभिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुनंगत अथवा संविद्या मामला है या

क्या श्री राजेश्द्र सिंह वर्गी की सेवायों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?